हिमाचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड

प्रिलिम्स के लिये:

हिमाचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड, मानसून, फ्लैश फ्लड, जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल, भारतीय मौसम विज्ञान विभाग, पश्चिमी विक्षोभ

मेन्स के लिये:

हिमाचल प्रदेश में फ्लैश फ्लड

चर्चा में क्यों?

वर्ष 2023 की मानसूनी बारिश के कारण हिमाचल प्रदेश के कई क्षेत्रों में फ्लैश फ्लड/**आकस्मिक बाढ़** के कारण जान-माल की अभूतपूर्व क्षति हुई है।

फ्लैश फ्लड:

- **परिचय:**
  - यह घटना **बारिश के दौरान या उसके बाद जल स्तर में हुई अचानक वृद्धि** को संदर्भित करती है।
    - यह अत्यधिक **उच्च क्षेत्रों में छोटी अवधि में घटित होने वाली घटना** है, आमतौर पर वर्षा और फ्लैश फ्लड के बीच छह घंटे से कम का अंतर होता है।
  - **जल निकासी लाइनों के अवरुद्ध होने** या जल के प्राकृतिक प्रवाह में बाधा डालने वाले अतिक्रमण के कारण बाढ़ की स्थिति और भी गंभीर हो जाती है।
- **कारण:**
  - ऐसी स्थिति **तेज़ आँधी**, तूफान, उष्णकटिबंधीय झंझावात **युक्त** भारी बारिश या बर्फ से पिघले जल या बर्फ की चादरों या बर्फ के मैदानों पर प्रवाहित होने वाली बर्फ के कारण उत्पन्न हो सकती है।
  - बाँध या तटबंध टूटने या भूस्खलन (मलबा प्रवाह) के कारण भी आकस्मिक बाढ़ आ सकती है।

हिमाचल प्रदेश में वर्षा का पैटर्न:

- हिमालय क्षेत्र में **कम समय में अधिक वर्षा होने** का एक उल्लेखनीय पैटर्न देखा गया है।
  - जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (Intergovernmental Panel on Climate Change- IPCC) की छठी आकलन रिपोर्ट में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भारतीय हिमालय और तटीय क्षेत्र **जलवायु परिवर्तन से सबसे ज़्यादा प्रभावित होंगे।**
  - भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) के आँकड़ों से पता चलता है कि इस अवधि के दौरान सामान्य वर्षा 720 मिमी. से 750 मिमी. के बीच होने की उम्मीद है। हालाँकि कुछ मामलों में **वर्ष 2010 में 888 मिमी. और वर्ष 2018 में 926.9 मिमी.** से अधिक वर्षा हुई।
- हिमाचल प्रदेश में वर्ष 2023 में अब तक हुई वर्षा के लिये पश्चिमी विक्षोभ के साथ दक्षिण-पश्चिम मानसून के संयुक्त प्रभाव को ज़िम्मेदार माना गया है।
  - जून से अब तक **कुल 511 मिमी. वर्षा** हुई है।

हिमाचल प्रदेश में आकस्मिक बाढ़ के कारक:

- **उदारीकरण द्वारा संचालित विकासात्मक मॉडल:**
  - हिमाचल प्रदेश के विकास मॉडल ने प्रगति की है तथा पर्वतीय क्षेत्रों को सामाजिक विकास में दूसरा स्थान दिया है।
  - उदारीकरण से **राजकोषीय सुधार के साथ ही आत्मनिर्भरता** की स्थिति देखी गई है। हालाँकि प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी बढ़ा है जिससे **पारिस्थितिक तंत्र पर विपरीत प्रभाव** पड़ा है।
- **जलविद्युत परियोजनाएँ:**
  - जलविद्युत परियोजनाओं के अनियंत्रित निर्माण के कारण **पहाड़ी नदियाँ अब महज जलधाराएँ बनकर रह गई हैं।**

- जब बहुत अधकि बारशि होती है अथवा बादल फटते हैं, तो जल का प्रवाह सुरंगों में बढ़ने और **अपशष्टि को नदी के कनिारे फेंक दयि जाने से आकस्मकि बाढ़ की स्थतिऔर भी गंभीर हो जाती है।**
    - अपशष्टि का अनुचति नपिटान न केवल बरसात के मौसम में भूस्खलन के लयि अनुकूल स्थति पैदा करता है, बल्क **मनुष्यों द्वारा नष्किाषति अवसाद नदी घाटयों को अवरुद्ध कर देता है जसिसे नदी का मार्ग बदल जाता है** और अतप्रिवाह के परणिामस्वरूप **आकस्मकि बाढ़ की स्थति उत्पन्न हो जाती** है।
- **पर्यटन और सड़क मार्ग का वस्तिार:**
    - आवश्यक भू-वैज्ञानकि अध्ययनों को दरकनिार करते हुए **पर्यटन-केंद्रति सड़क मार्ग का वस्तिार करते हुए चार-लेन और दो-लेन वाली सड़कों** का नर्मिाण कयि गया है।
    - सड़क नर्मिाण के दौरान पहाड़ों की ऊर्ध्वाधर कटाई के परणिामस्वरूप **सामान्य वर्षा के दौरान भी भूस्खलन के कारण मौजूदा कई सड़कें क्षतग्रिस्त हो गई हैं**, इस प्रकार भारी बारशि अथवा बाढ़ की स्थति में होने वाले वनिाश की तीव्रता काफी बढ़ गई है।
        - पहले पहाड़ों में सीढ़ीदार और घुमावदार सड़कें होती थीं जो भूस्खलन के प्रतकिुछ हद तक सुरक्षति थीं लेकनि **खड़ी सड़कें** भूस्खलन एवं कटाव के प्रतअिधकि संवेदनशील होती हैं।
- **सीमेंट संयंत्र:**
    - बड़े पैमाने पर सीमेंट संयंत्रों **की स्थापना तथा व्यापक स्तर पर पहाड़ों के कटान ने भूमउिपयोग के पैटर्न को बदल दयि है** जसिसे भूमकिी जल अवशोषण क्षमता कम हो गई है तथा **वर्षा के दौरान आकस्मकि बाढ़** की संभावनाएँ बढ़ी हैं।
- **फसल पैटर्न में परविर्तन:**
    - पारंपरकि अनाज की खेती के बजाय नकदी फसल तथा बागवानी अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव, जनिका परविहन **कम समय-सीमा के भीतर बाज़ारों में** करना पड़ता है **क्योंकवि जल्दी खराब हो जाते हैं।**
    - उचति भूमकिटाई तथा जल नकिासी के बनिा नकदी फसलों या बड़े कृषक्षित्रों के लयि जल्दबाज़ी में सड़क नर्मिाण के कारण **वर्षा के दौरान नदयों में तेज़ सैलाब के चलते** बाढ़ की संभावना बढ़ जाती है।

आकस्मकि बाढ़ से नपिटने के लयि सरकारी पहल:

- राष्ट्रीय बाढ़ जोखमि न्यूनीकरण परयिोजना (NFRMP)
- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना (NDMP)**
- **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधकिरण (NDMA)**
- **भारतीय मौसम वज्ञिान वभिाग (IMD)**
- **राष्ट्रीय बाढ प्रबंधन कार्यक्रम**
- **राष्ट्रीय बाढ़ आयोग (राष्ट्रीय बाढ़ आयोग-1976)**

आगे की राह

- प्रमुख हतिधारकों को शामलि करते हुए एक जाँच आयोग गठति करना, जो स्थानीय समुदायों की संपत्तयों पर उनके अधकिार को सशक्त बनाने के साथ त्वरति पुनर्नर्मिाण की सुवधिा के लयि संपत्तयों का बीमा प्रदान करे। जलवायु परविर्तन की वास्तवकिता पर वचिार करते हुए आपदाओं को रोकने के लयि बुनयिादी ढाँचे की योजना में पर्याप्त बदलाव भी महत्त्वपूर्ण हैं।
- जलवायु परविर्तन को एक वास्तवकिता के रूप में देखते हुए लोगों को समस्या को नहीं बढ़ाना
- चाहयि, बल्करािज्य में पछिले कुछ समय से देखी जा रही **आपदाओं को रोकने के लयि बुनयिादी ढाँचे की योजना में पर्याप्त बदलाव** करना चाहयि।

स्रोत: द हदिू

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/flash-floods-in-himachal-pradesh